अध्याय 9: एक कहानी यह भी

विषय-सूची

3 प्रश्नावली · 9 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1	प्रश्न-अभ्यास	5 प्रश्न
प्रश्नावली 9.2	रचना और अभिव्यक्ति	3 प्रश्न
प्रश्नावली 9.3	भाषा-अध्ययन	1 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

हल

लेखिका मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व पर मुख्यतः दो व्यक्तियों का गहरा प्रभाव पड़ा—

1. पिताजी का प्रभाव: पिताजी एक ओर बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी। उनकी यश-लिप्सा, 'विशिष्ट' बनने की प्रबल लालसा और बहस करने की आदत ने लेखिका के स्वभाव को प्रभावित किया। उन्होंने लेखिका को रसोई से दूर रखकर राजनैतिक-सामाजिक बहसों में शामिल किया, जिससे लेखिका में देश-दुनिया को जानने-समझने की जिज्ञासा जागी। पिताजी की कुंठाएँ, शक्की स्वभाव और अंतर्विरोध भी लेखिका में कहीं-न-कहीं उतर गए।

2. शीला अग्रवाल का प्रभाव: कॉलिज की हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका को सही अर्थों में साहित्य की दुनिया से परिचित कराया। उन्होंने चुन-चुनकर किताबें दीं, पढ़ी हुई पुस्तकों पर बहसें कीं और साहित्यिक समझ विकसित की। इसके अलावा उन्होंने घर की चारदीवारी से निकालकर लेखिका को स्वाधीनता आंदोलन की सक्रिय भागीदार बनाया और उनके भीतर के जोश को लावे में बदल दिया।

उत्तर: लेखिका के व्यक्तित्व पर पिताजी (देश-चेतना, यश-कामना, अहंवाद की छाप) और कॉलिज प्राध्यापिका शीला अग्रवाल (साहित्यिक संस्कार और स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी) का सबसे गहरा प्रभाव पड़ा।

प्रश्न 2

इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

हल

लेखिका के पिताजी एक महत्त्वाकांक्षी और यश-लिप्सु व्यक्ति थे। उनका सिद्धांत था कि व्यक्ति को कुछ विशिष्ट बनकर जीना चाहिए, समाज में नाम और प्रतिष्ठा कमानी चाहिए।

उनके लिए रसोई का काम—जो उन दिनों लड़कियों की अनिवार्य 'योग्यता' माना जाता था—एक ऐसा स्थान था जहाँ व्यक्ति की प्रतिभा और क्षमता भट्टी (भटियारखाने की आग) में झोंककर नष्ट हो जाती है।

'भटियारखाना' शब्द उस स्थान के लिए प्रयुक्त होता है जहाँ रोटियाँ सेंकी जाती हैं—एक तरह का भोजनालय या खाना पकाने की जगह। पिताजी का आशय था कि रसोई में उलझी लड़की अपनी पूरी बौद्धिक क्षमता और प्रतिभा को वहीं खो देती है।

इसीलिए वे चाहते थे कि मन्नू रसोई से दूर रहे और बड़े-बड़े विचारकों-नेताओं की बहसों में बैठकर देश की स्थितियों को जाने-समझे तथा अपनी बौद्धिक शक्ति का विकास करे।

उत्तर: पिताजी के अनुसार रसोई में रहना प्रतिभा और क्षमता को 'भट्टी में झोंकना' है—वे चाहते थे कि मन्नू घर की बहसों में शामिल हो और बौद्धिक विकास करे, इसलिए रसोई को 'भटियारखाना' कहकर उससे दूर रखा।

प्रश्न 3

वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

हल

स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में एक बार कॉलिज प्रिंसिपल ने पिताजी को पत्र लिखा कि वे आकर बताएँ कि मन्नू की गतिविधियों के कारण उसके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए।

पत्र पढ़ते ही पिताजी आग-बबूला हो गए और गुस्से से भन्नाते हुए कॉलिज गए। मन्नू को डर था कि लौटकर वे कहर बरपाएँगे, इसलिए वह पड़ोसी मित्र के यहाँ जाकर बैठ गई।

परंतु जब माँ ने आकर कहा कि पिताजी तो खुश हैं, तब विश्वास नहीं हुआ। लौटकर पिताजी ने बड़े गर्व से बताया कि प्रिंसिपल ने कहा—'सारे कॉलिज की लड़कियों पर इतना रौब है तेरा, सारा कॉलिज तुम तीन लड़कियों के इशारे पर चल रहा है।' पिताजी ने यह सुनकर प्रिंसिपल से कहा—'यह तो पूरे देश की पुकार है, इस पर कोई कैसे रोक लगा सकता है।'

गुस्से से कहर बरपाने जाने वाले पिताजी का गर्वपूर्ण लौटना—यह असंभाव्य परिवर्तन देख-सुनकर लेखिका को न आँखों पर विश्वास हुआ, न कानों पर।

उत्तर: कॉलिज प्रिंसिपल का पत्र पाकर गुस्से से गए पिताजी का गर्व से लौटना—यह जानकर कि प्रिंसिपल ने मन्नू की संगठन-शक्ति की प्रशंसा की—यही वह घटना थी जिस पर लेखिका को न आँखों पर विश्वास हुआ न कानों पर।

प्रश्न 4

लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

हल

लेखिका और उनके पिताजी के बीच वैचारिक टकराहट का आधार था—व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक मर्यादा का द्वंद्व।

पिताजी एक ओर चाहते थे कि मन्नू 'विशिष्ट' बने, राजनैतिक-सामाजिक बहसों में भाग ले और कुछ खास कर दिखाए। दूसरी ओर वे अपनी सामाजिक छवि के प्रति भी उतने ही सजग थे—हाथ उठाकर नारे लगाती, लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती, हड़तालें करवाती लड़की को उनकी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना कठिन था।

जब रगों में लावा बहता हो तो सारे निषेध और वर्जनाएँ ध्वस्त हो जाती हैं—यह मन्नू का दृष्टिकोण था। किसी की दी हुई आजादी के दायरे में चलना उन्हें स्वीकार नहीं था।

इसके अलावा पिताजी का शक्की स्वभाव, क्रोध और अहंवाद भी टकराहट का कारण था। यह टकराहट राजेंद्र

यादव से विवाह तक चलती रही।

पिताजी के अंतर्विरोध को लेखिका ने पहचाना—एक ओर 'विशिष्ट' बनाने की लालसा, दूसरी ओर सामाजिक छवि की चिंता—इन दोनों का रास्ता ही टकराहट का है।

उत्तर: लेखिका और पिताजी के बीच टकराहट—'विशिष्ट' बनने की चाहत बनाम सामाजिक छवि की चिंता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता बनाम सामाजिक वर्जनाएँ—इन दोनों परस्पर-विरोधी मूल्यों के कारण लगातार बनी रही।

प्रश्न 5

इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

हल

स्वाधीनता आंदोलन का परिदृश्य (सन् '46-47):

सन् '46-47 के दिन—पूरे देश में एक खौलता माहौल था। प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस और भाषण हर शहर का चरित्र था। अजमेर भी इससे अछूता नहीं था—चौपड़ (मुख्य बाजार का चौराहा) पर विद्यार्थी-वर्ग एकत्र होता था और भाषणबाजी होती थी। आजाद हिंद फौज के मुकदमे के समय सभी कॉलिजों-स्कूलों-दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान हुआ। जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का समूह वहाँ जाकर हड़ताल करवाता था। एक ओर शहर में बवंडर था, दूसरी ओर घर में—पिताजी और मन्नू के बीच।

मन्नू भंडारी की भूमिका:

— शीला अग्रवाल की प्रेरणा से मन्नू ने स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की।

— वे हाथ उठाकर नारे लगाती थीं, कॉलिज में हड़तालें करवाती थीं और लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती थीं।

— उनकी संगठन-शक्ति इतनी थी कि पूरा कॉलिज उनके इशारे पर चलता था—प्रिंसिपल भी परेशान थीं।

— चौपड़ पर उन्होंने भाषण दिया जिसे सुनकर डॉ. अंबालाल जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति ने पिताजी को बधाई दी।

— सन् '47 में शीला अग्रवाल को नोटिस मिलने पर हुड़दंग मचाकर कॉलिज को अगस्त में थर्ड इयर खोलने पर मजबूर किया।

इस प्रकार मन्नू भंडारी ने एक युवा लड़की के रूप में स्वाधीनता आंदोलन में उत्साह, ओज, संगठन-क्षमता और विरोध करने के तरीके का परिचय दिया।

उत्तर: सन् '46-47 में पूरा देश और अजमेर शहर हड़तालों-जुलूसों से खौल रहा था; मन्नू ने नारेबाजी, हड़ताल, भाषण और संगठन से सक्रिय भागीदारी की और अपनी संगठन-शक्ति से पूरा कॉलिज प्रभावित किया।

प्रश्नावली 9.2 — रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 6

लेखिका ने बचपन में अपने भाइयों के साथ गिल्ली डंडा तथा पतंग उड़ाने जैसे खेल भी खेले किंतु लड़की होने के कारण उनका दायरा घर की चारदीवारी तक सीमित था। क्या आज भी लड़कियों के लिए स्थितियाँ ऐसी ही हैं या बदल गई हैं, अपने परिवेश के आधार पर लिखिए।

हल

पाठ के अनुसार तब की स्थिति: लेखिका के समय लड़कियों का दायरा घर तक सीमित था—वे भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा और पतंग खेल तो सकती थीं, पर भाइयों की तरह घर के बाहर स्वतंत्र रूप से नहीं निकल सकती थीं। मोहल्ले तक की सीमा थी।

आज की स्थिति (परिवेश के आधार पर):

आज स्थितियाँ काफी बदल गई हैं। लड़कियाँ स्कूल-कॉलिज में पढ़ती हैं, खेल के मैदान में उतरती हैं—क्रिकेट, फुटबॉल, कुश्ती जैसे खेलों में राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करती हैं। घर के बाहर काम करना, यात्रा करना, निर्णय लेना—सब उनके जीवन का हिस्सा बन गए हैं।

तथापि पूर्ण समानता अभी भी नहीं आई है। ग्रामीण और कुछ रूढ़िवादी परिवारों में लड़कियों पर अभी भी कई प्रतिबंध लगाए जाते हैं। रात में अकेले बाहर जाना, किसी भी क्षेत्र में स्वतंत्र भागीदारी—इनमें अभी भी असमानता है।

निष्कर्ष: स्थितियाँ बदली हैं, पर बदलाव अधूरा है। पूर्ण समानता तभी आएगी जब समाज की मानसिकता पूरी तरह बदले।

उत्तर: लेखिका के समय लड़कियाँ घर तक सीमित थीं; आज स्थितियाँ काफी बदली हैं—लड़कियाँ शिक्षा, खेल, व्यवसाय सभी में आगे हैं, फिर भी समाज की रूढ़िवादी सोच के कारण पूर्ण समानता अभी भी नहीं आई है।

प्रश्न 7

मनुष्य के जीवन में आस-पड़ोस का बहुत महत्त्व होता है। परंतु महानगरों में रहने वाले लोग प्रायः 'पड़ोस कल्चर' से वंचित रह जाते हैं। इस बारे में अपने विचार लिखिए।

हल

लेखिका ने स्वयं लिखा है कि उन्हें बड़ी शिद्दत के साथ महसूस होता है कि 'अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत पड़ोस-कल्चर से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।'

पड़ोस के महत्त्व के तर्क:

— पड़ोस सुख-दुःख में साझीदारी का स्थान होता है। बीमारी, आपदा या खुशी के अवसर पर पड़ोसी ही सबसे पहले मदद करते हैं।

— बच्चों का सर्वांगीण विकास पड़ोस के परिवेश में होता है। लेखिका की एक दर्जन से अधिक कहानियों के पात्र उनके मोहल्ले से ही आए।

— पड़ोस-कल्चर मानवीय संबंधों को जीवित रखता है और अकेलेपन से बचाता है।

महानगरों की समस्या:

— महानगरों में फ्लैट-संस्कृति ने लोगों को अपने-अपने दरवाजों के भीतर बंद कर दिया है। पड़ोसी का नाम तक नहीं पता।

— 'अपनी जिंदगी खुद जीने' के दबाव ने साझेपन की भावना को कमजोर किया है।

निष्कर्ष: पड़ोस-कल्चर की पुनर्स्थापना के लिए सोसायटी की सामूहिक गतिविधियाँ, त्योहारों का साझा उत्सव और सहायता की भावना जागृत करनी होगी।

उत्तर: पड़ोस-कल्चर सुख-दुःख की साझीदारी, मानवीय रिश्ते और सुरक्षा का आधार है; महानगरों की फ्लैट-संस्कृति ने इसे खत्म करके लोगों को संकुचित और असुरक्षित बना दिया है—इसे पुनर्जीवित करने की जरूरत है।

प्रश्न 8

लेखिका द्वारा पढ़े गए उपन्यासों की सूची बनाइए और उन उपन्यासों को अपने पुस्तकालय में खोजिए।

हल

पाठ में लेखिका मन्नू भंडारी ने निम्नलिखित उपन्यासों/पुस्तकों का उल्लेख किया है—

1. सुनीता — लेखक: जैनेंद्र कुमार (लेखिका को बहुत अच्छा लगा था)
2. शेखर: एक जीवनी — लेखक: अज्ञेय (पहले पढ़ा, समझ में नहीं आया; बाद में नदी के द्वीप पढ़कर फिर पढ़ा)
3. नदी के द्वीप — लेखक: अज्ञेय (मन को बाँध लिया)
4. त्यागपत्र — लेखक: जैनेंद्र कुमार
5. चित्रलेखा — लेखक: भगवतीचरण वर्मा

इनके अलावा पाठ में शरत् चंद्र, प्रेमचंद, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल और भगवतीचरण वर्मा का सामान्य उल्लेख भी है।

पुस्तकालय में खोजना: ये सभी उपन्यास हिंदी साहित्य के कालजयी ग्रंथ हैं और किसी भी अच्छे पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

उत्तर: लेखिका द्वारा पढ़े उपन्यास: सुनीता (जैनेंद्र), शेखर: एक जीवनी (अज्ञेय), नदी के द्वीप (अज्ञेय), त्यागपत्र (जैनेंद्र), चित्रलेखा (भगवतीचरण वर्मा)।

प्रश्नावली 9.3 — भाषा-अध्ययन

प्रश्न 10

इस आत्मकथ्य में मुहावरों का प्रयोग करके लेखिका ने रचना को रोचक बनाया है। रेखांकित मुहावरों को ध्यान में रखकर कुछ और वाक्य बनाएँ— (क) इस बीच पिता जी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिता जी की लू उतारी। (ख) वे तो आग लगाकर चले गए और पिता जी सारे दिन भभकते रहे। (ग) बस अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ। (घ) पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला।

हल

पहले मुहावरों के अर्थ समझें, फिर नए वाक्य—

(क) लू उतारना — अर्थ: किसी की कड़ी आलोचना करना / खूब बुराई करना

नया वाक्य: परीक्षा में कम अंक आए तो शिक्षक ने कक्षा में आकर रमेश की अच्छी तरह लू उतारी।

(ख) आग लगाकर चले जाना — अर्थ: झगड़ा करवाकर / परेशानी खड़ी करके चले जाना

नया वाक्य: वह पड़ोसियों में झगड़े की बात डालकर आग लगाकर चला गया, फिर दोनों परिवार दिन भर लड़ते रहे।

भभकते रहना — अर्थ: गुस्से में उबलते रहना / क्रोधित बने रहना

नया वाक्य: ऑफिस में बॉस ने जब सबके सामने टोका तो सुरेश शाम तक भभकते रहे।

(ग) थू-थू करके चले जाना — अर्थ: बहुत निंदा करना / बुरा-भला कहकर जाना

नया वाक्य: उसने पड़ोसियों का पैसा लेकर लौटाया नहीं, अब लोग उसके दरवाजे पर थू-थू करके चले जाते हैं।

(घ) आग-बबूला होना — अर्थ: बहुत क्रोधित होना

नया वाक्य: जब माँ को पता चला कि भाई ने परीक्षा नहीं दी, वे एकदम आग-बबूला हो गईं।

उत्तर: (क) लू उतारना = खूब बुराई करना; (ख) आग लगाकर जाना = झगड़ा करवाकर जाना, भभकना = क्रोधित रहना; (ग) थू-थू करना = निंदा करना; (घ) आग-बबूला होना = अत्यंत क्रोधित होना — प्रत्येक मुहावरे से नए वाक्य बनाए गए।